मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 11

MTT-045

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.टी.टी.-045 : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) मुहावरों तथा कहावतों के अनुवाद का महत्व स्पष्ट कीजिए। सिंधी मुहावरों और कहावतों के हिंदी अनुवाद कार्य में आने वाली समस्याओं की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

अथवा

(ख) सार्वजनिक सूचना का अर्थ व विभिन्न प्रकार बताइए। किसी भी विषय से संबंधित सार्वजनिक सूचना हिंदी में लिखिए और उसका सिंधी अनुवाद कीजिए।

2. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

(i) शिकायत (ii) बधाई (iii) प्रमाण (iv) पुण्यतिथि (v) लोकतंत्र (vi) योगदान (vii) नियंत्रण (viii) आलोचना (ix) उपस्थित (x) तूफ़ान

3. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

(i) दुरुस्तु (ii) निबेरो (iii) दस्तूरी (iv) सबबु (v) हिदायत (vi) दरख़्वास्त (vii) इतिलाउ (viii) गुझो (ix) रिथा (x) उहिदो

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 20

हिंदी शब्द	**सिंधी शब्द**
यामिनी	वेनती
अनुकूल	शख़्सी
नियुक्ति	वधाउ
अनुसंधान	रहबरी
प्रतिबिंब	सजायो

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 4×10=40

(i) जैसलमेर की लोक परम्पराओं, कला एवं संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा देश-विदेश के पर्यटकों को

स्थानीय इतिहास, कला और संस्कृति की प्रामाणिक जानकारी देने हेतु 'जैसलमेर लोक सांस्कृतिक संग्रहालय' की स्थापना की गई।

इस संग्रहालय की स्थापना नन्दकिशोर शर्मा ने 4 अक्टूबर, 1984 को विजयादशमी के दिन की थी। यह संग्रहालय कवि तेज लोककला विकास समिति के तत्वाधान में एक रजिस्टर्ड संस्था द्वारा चलाया जाता है। यह पाँच कक्षों में विभाजित है।

पहले कक्ष में अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के जैसलमेरी शैली के चित्र, प्राचीन समय में यहाँ के निवासियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले बर्तन तथा विभिन्न जातियों की भिन्न-भिन्न प्रकार की वेशभूषा व उनके केश-विन्यास को रखा गया है। रवि वर्मा के चित्रों पर यहाँ की महिलाओं द्वारा किया गया मोतियों का काम भी यहाँ देखने को मिल सकता है।

दूसरा कक्ष जीवाश्मों, सिक्कों, हस्तलिखित पुस्तकों व जैसलमेर के महारावलों के चित्रों से सज्जित है। इन जीवाश्मों से पुरातत्ववेत्ताओं की यह धारणा पुष्ट होती है कि यहाँ कभी समुद्र था। सन् 1660 से जैसलमेर राज्य के भारत में विलय होने तक के सिक्के, पोस्टकार्ड, डाक टिकट, ताम्रपत्र व कई हस्तलिखित पुस्तकें भी इसी कक्ष में संग्रहीत हैं।

(ii) **मैं यात्री हूँ**

मैं यात्री हूँ! मुझे कोई रोककर नहीं रख सकता!

सुख–दुःख के सब बंधन मिथ्या हैं

यह घर, ये बंधन–सब कहाँ तो पीछे पड़े रह जाएँगे! विषयों के

जाल मुझे नीचे खींचते रहते हैं, उनका एक–एक

तार टूटकर बिखर जाएगा।

मैं यात्री हूँ। पथ पर चलते हुए मैं जी भर

गीत गाता चलता हूँ। मेरे देह–दुर्ग के सब द्वार खुल जाएँगे!

वासनाओं की जंजीरें टूट जाएँगी, पाप–पुण्य के भंवरों से

मैं निकल पार हो जाऊँगा। मैं दूर देश का यात्री, पर, चलता

रहूँगा- मैं यात्री हूँ। मेरे सब भार हलके हो गए!

आकाश मुझे दूर बुला रहा है, किसी की

वंशी का गंभीर गुंजन भाषाहीन अनजाने गीत से सुबह–शाम मेरे

प्राणों को अपनी ओर बरबस खींच रहा है।

मैं यात्री हूँ! मैं रात के किस पहर बाहर आया, कौन जाने ?

उस समय कोई पक्षी गीत नहीं गा रहा था।

रात कितनी बीत गई थी, मालूम नहीं। हाँ, एक निर्निमेष नयन ही

उस अंधकार में जाग रहा था।

मैं यात्री हूँ! किस दिन की अंतिम घड़ियों में मुझे किस घर पहुँचना है, कौन जाने ?

वहाँ कौन-से तारे दीपक को प्रदीप्त करेंगे,

कौन-से फूलों की सुगन्ध से वायु रो उठेगी,

कौन-सा अनादि काल अपने स्निग्ध नेत्रों से वहाँ मेरी

प्रतीक्षा कर रहा है-कौन जाने ? मैं यात्री हूँ।

(iii) **कार्यालय ज्ञापन**

विषय : वित्तीय वर्ष 2021-2022 से केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम-काज राजभाषा हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु अभ्यास आधारित नए पाठ्यक्रम 'पारंगत' के अधीन प्रस्तावित मानदेय (पुरस्कार) लागू करने के संबंध में।

केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा 'पारंगत' पाठ्क्रम का प्रशिक्षण आरंभ किया गया है। वित्तीय वर्ष 2021-2022 से 'पारंगत' पाठ्क्रम को व्यापक व लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र सरकार के कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तीर्ण होने पर निम्नलिखित एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का निर्णय लिया गया है:—

(क)	55% से 59% तक अंक प्राप्त करने पर	₹ 4,000
(ख)	60% से 69% तक अंक प्राप्त करने पर	₹ 7,000
(ग)	70% से अधिक अंक प्राप्त करने पर	₹ 10,000

(1) उपर्युक्त प्रोत्साहन संबंधी वित्तीय खर्च को संबंधित मंत्रालयों/विभागों को ही वहन करना पड़ेगा।

(2) यह कार्यालय ज्ञापन वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति से उनके दिनांक 17-12-2020 की अंतरविभागीय टिप्पणी संख्या 14(2) ई-समन्वय 2015 (1526920) के अनुसार जारी किया जा रहा है।

(iv) माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सबकुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। 'मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा', उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, 'ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।' जब तक संध्या समय सुल्तान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका

हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, 'खड़्गसिंह, क्या हाल है ?'

खड़्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, 'आपकी दया है।'

'कहो, इधर कैसे आ गए ?'

'सुल्तान की चाह खींच लाई।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

(v) **पन्ना :** तू उदयसिंह को छू भी नहीं सकता। नीच, नारकी। महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी। विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोई जाएगी।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर। तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे? नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता। महाराणा बनवीर। तुम राज करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज करो। पर कुँवर उदयसिंह

को छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिन हो जाऊँगी। तीर्थों में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दे दो।

बनवीर :दूर हट दासी। यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी है। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से हट जा ।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी। अपने कुँवर की शैय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर :उदयसिंह को सुला दिया है, जिससे उसे मरने का कष्ट न हो। उसका मुख भी ढँक दिया है। वाह री धाय माँ। बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है (तीव्रता से) शैय्या से दूर हट पन्ना। मैं उसे चिर निद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर नराधम, नारकी। ले मेरी कटार का प्रसाद ले, (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर सुन पड़ती है।)

बनवीर :(क्रूर अट्टाहास करता है) ह ह ह ह। दासी कर लिया कटार का वार। यह कटार मेरे हाथ में है, अब किससे वार करेगी ? अब तुझे भी समाप्त कर दूँ ? लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

(i) ईएं त तबदील जीवन जो धर्मु आहे — कुदिरत जो नेम आहे। हरिका शै पई बदिलजे; वरी असीं ॿोलियूं त आहयूं नदियुनि मिसिलु। जीअं नदी सदाईं वहंदी रहंदी आहे, जुदा जुदा हंधनि तां मोड़ खाईंदी हलंदी आहे ऐं इएं रूप मटाईंदी रहंदी आहे तीअं ॿोली बि जे कम में ईंदी रहंदी त मोड़ खाईंदी रहंदी, रूप मटाईंटी रहंदी। नदी वहे न त बीही बांस करे ऐं आख़िर सुकी ठोठ थी वञे, साॻीअ तरह सां जे ॿोली वाहिपे में न अचे त ख़तमु थी वञे। इनकरे तबदील या फेरि घेरि जो को डपु कोन्हे। हूंअं बि वाउ अनुसार पुठि ॾियणि जो गुण मूं में मौजूद आहे। ॾिसो, सिंधु में रहंदे, निजु भारती ॿोली हुअण जे बावजूद, ज़रूरत पवण ते मूं अरबी ऐं ईरानी ॿोलियुनि खां घणो कुछु वर्तो, घणो कुछ सिख्यो; वरी जॾहिं सिंधु में अंग्रेज़ी हुकूमत क़ाइम

थी ऐं अंग्रेज़ी मुंहिंजे घर अंदरि लंघे आई तड॒हिं मूं इन जो बि निरादर न कयो ऐं सवें हज़ारें अंग्रेज़ी लफ़्ज पाण में ज़ज़्बु करे वर्तुम। मतलब इहो ई त डे॒ वठु असां बो॒लियुनि जो गुणु ऐं मर्क आहे।

(ii) कविता – 'राधा गो॒ल्हे श्याम खे'

तान बंसरीअ जी बु॒धंदे ई,
पाण विञाए पाण में, राधा गो॒ल्हे श्याम खे।

(1) बिंदराबन जे कुंज कुंज में,
हिक हिक प्रेम वथाण में, राधा गो॒ल्हे श्याम खे।

(2) वणनि वलियुनि में, गीत गीत में,
सावक ऐं पीलाण में, राधा गो॒ल्हे श्याम खे।

(3) कोयल जे कू कू में गो॒ल्हे,
गुल गुल जे सुरहाण में, राधा गो॒ल्हे श्याम खे।

(4) जमना जे लहिरुनि में लोचे,
पाणीअ जी नीराण में, राधा गो॒ल्हे श्याम खे।

(5) गो॒ल्हे गो॒ल्हे थकिजी टुटजी,
टुबी॒ डि॒ए थी पाण में, श्यामु डि॒से थी पाण में।
राधा गो॒ल्हियो श्याम खे।
राधा पातो श्याम खे।

× × × × × × ×